अस्सलामो अलय कुम,

*** जो ये बयांन देते है के काबा के इमाम के पीछे नमाज़ नहीं होती उनके लिए निचे थोड़ी हदीथ है उनका जवाब महेरबानी करके हदीथ से ही दे. और किताब का नाम भी बताये.***

ये सारी हदीथ जरुरत के तौर पर उनके पीछे नमाज़ पढ़ सकते है इसलिए है और देश बदलने की वजह से राजा वो है तो उनकी पैरवी हम पर लाज़िम है नेकी करने की बातो में..

[1]

***** मुसलमान हुकुमरानों की इताअत *****

अहले सुन्नत का इस बात पर इज्मा है के --- मुसलमान हुकमरानो और उनकी इत्तेबा करने वालो की बात सुन कर उनकी फरमाबरदारी की जाये --हर बद -- व नेक के पीछे --*नमाज जायज है*... चाहे वो-- आदिल हो-- या –ज़ालिम--। इसी तरह वो सखस जिसको वो –मुक़र्रर-- करे। और अपना –जानशीन-- बनाये। किसी अहले क़िब्ला मुसलमान के बारे में ---जन्नती या ---दोज़खी होनेका कतई --फैसला --न करे-- चाहे वो --मति हो या --नाफरमान --------हिदायत आफ़ता हो या--- गुमराह जब तक इसके बिद्दती होने पर इत्तिला न हो..

Guniyat -Ut-Talibeen–Page ---no.270 (Mahboobe Subhani Sayyeed Abdul Qadir Jilani Radiyallahu Anhu)

[2]

***** अच्छे और बुरे हाकिम का बयान *****

ऑफ बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के ::: नबी करीम सल्लल्लाहो अलय वसल्लम ने फ़रमाया :::

--बेहतर-- हाकिम वो है जिन हे-- तुम चाहते हो -- और वो तुम को ---चाहते हो--- वो तुम्हारे लिए --दुआ --करते हो और तुम उनके लिए --दुआ --करते हो .

और–बुरे-- हाकिम वो है जिन के तुम –दुश्मन-- हो और वो तुम्हारे–दुश्मन-- हो तुम उन पर–लानत-- करते हो वो तुम पर –लानत-- करते हो.

--लोगो ने कहा या रसूलल्लाह हम ऐसे हकीमो को तलवार से दफा न करे ?

--आप ने फ़रमाया नहीं ---

--- जब तक वो नमाज़ को तुम में कायम करते रहे---

और जब तुम कोई बात उनकी बुरी जानो तो दिल में बुरा जानो लेकिन --**उनकी इताअत से बहार न हो---**

MUSLIM SARIF-4801-4802-4803-4804--

[3]

*** इमाम --- हुकमरान -- आमिर तुमको क़ुरान के खिलाफ कोई बात कहे -- तो उनकी बात- ना -मानो ***

(मफ़हूमे हदीथ)

और जो सख्स किसी इमाम से बैत करे तो उसे अपना हाथ देदो और दिल से निय्यत करे इसकी ताबेदारी की ओर इसकी इताअत करे अगर ताकत हो तो।

एक सहाबी ए रसूल आमिर (हुकुमरान) की अताअत करने वाली हदीथ बयान कर रहे थे के ---कोई भी हाल हो आमिर (हुकुमरान) की इताअत करनी है। ....

--- उसमे एक ताबेई ने कहा के अगर आमिर (हुकुमरान) कुरान के खिलाफ भी कोई बात कहे तो भी---

(सहाबी ने पूछा कोनसी बात ?)

ताबेई ने कहा --

(--दूसरे सहाबी-- जो हुकुमरान है -- वो -- हुक्म दे रहे है-- के)

---तुम लोगो का माल को ना-हक़ तरीके से खालो। ---

तभी मेने (ताबेई ने) क़ुरान की आयत सूरे निसा की आयत नो. 29 तिलावत फ़रमाई और कहा–

--- मोमिनो एक दूसरे का माल ना- हक़ न खाओ---

तभी पहले वाले सहाबी ने ये कुरान की आयत सुनकर कहा के--- *अगर कोई भी हुकमरान तुमको क़ुरान के खिलाफ कोई बात कहे -- तो उनकी बात- ना -- मानो*. (चाहे वो सहाबी हो),,,

---4776-MUSLIM SARIF ----

[4]

:: इमाम अगर अपनी नमाज़ को सही न पढ़े और मुक्तदी सही पढ़े ::

अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से नबी करीम सल्लल्लाहु अलय है वसल्लम ने फ़रमाया के इमाम लोगो को नमाज़ पढ़ाते है. पेस इमाम ने अगर ठीक नमाज़ पढ़ाई तो इसका सवाब तुम्हे मिलेगा.. और अगर गलती की तो भी *तुम्हारी नमाज़ का सवाब तुम को मिलेगा और गलती का वबाल इमाम पैर रहेगा।* .

Bukhari sarif::694::kitab azan

---

[5]

::फितना और बिद्दती इमाम का बयान::

इमाम बसरी रहमतुल्लाह अलय फरमाते है के *बिद्दती इमाम के पीछे नमाज पढ़लो*। इसकी बिद्दत का गुनाह इसके सर होगा...

हजरत अब्दुल्लाह बिन अदि से रिवायत है के वो हजरत उस्मान रदियल्लाहु अन्हु के पास उस वक़्त हाजिर हुवे जब आप नजर बंध थे। और आपस अर्ज किया के आप तो तमाम लोगो के इमाम है और आप ऐसी आजमाइसे है जो हम देख रहे है। . सुरते हाल ये है के इमाम फितना नमाज़ पढ़ा रहे है। जिस से हम तंग दिल होते है.. हजरत उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया नमाज़ लोगो के आमाल में अच्छा अमल है। जब लोग अच्छा काम करे यानि नमाज़ पढ़े तो तुम भी उनके साथ नमाज़ पढ़ो। और जब वो बुरा काम करे तो तुम उसकी बुराई से अलग हो जाओ...

Bukhari sarif::695::kitab azan-::

[6]

::आमिर के पीछे नमाज़ पढ़ने का बयान::

हजरत आमिर बिन हानि फरमाते है के जब **हज्जाज बिन युसूफ** ने हजरत जुबेर रदियल्लाहु अन्हु का महा सिरह कर रखाथा। हजरत इब्ने उम्र रदियल्लाहु अन्हु का घर **हज्जाज** और इब्न जुबेर रदियल्लाहु अन्हु के दरमियान था . कभी इब्ने जुबेर रदियल्लाहु अन्हु के *साथ नमाज़ पढते और कभी **हज्जाज के साथ***।

(musannaf ibn abi shaiba -part 2-hadith no.-7641-kitab salah)

(**अल हज्जाज ने** 4 सहाबा को क़तल किया है..)

1...अब्द अल्लाह इब्न अल ज़ुबैर

2...जाबिर इब्ने अब्दल्लाह

3...सईद इब्ने ज़ुबैर

4...कुमैल इब्ने ज़ियाद

अल हज्जाज ने अब्द अल्लाह इब्न अल ज़ुबैर को सूली पैर चढ़ा दिया था और कहने लगा इनकी बॉडी को अगर निचे उतारना है तो अस्मा रदियल्लाहु अन्हु (हजरत अबू बाकर रदियल्लाहु अन्हु की लड़की)

को मेरे पास आके परमिशन लेनी होगी..

1,00,000 से ज्यादा लोगो को अल हज्जाज ने क़तल करवाया था..

[7]

हजरत जाफर रदियल्लाहु अन्हु अपने वालिद से रिवायत करते है। हजरत हसन रदियल्लाहु अन्हु और हजरत हुसैन रदियल्लाहु अन्हु ***मरवान** के पीछे नमाज पढा करते थे.* इन से किसी ने कहा के आपके वालिद घर जाकर वापस नमाज़ नहीं पढ़ते ?उन्होंने फ़रमाया नहीं। खुदा की कसम वो आईमा नमाज़ पर कोई इज़ाफ़ा न करते थे..

(musannaf ibn abi shaiba -part 2-hadith no.-7642-kitab salah)

[8]

हजरत इब्राहिम फरमाते है *इस्लाफ़ आइमा के पीछे नमाज़ पढा करते थे.* ***खवाह वो जो कोई भी हो।*** .

(musannaf ibn abi shaiba -part 2-hadith no.-7643-kitab salah)

[9]

हजरत हसन रदियल्लाहु अन्हु फरमाते है के *मोमिन को मुनाफ़िक़ के पीछे नमाज़ पढ़ने से कोई नुकसान नहीं* और मुनाफ़िक़ को मोमिन के पीछे नमाज़ पढ़ने में कोई फायदा नहीं।

(musannaf ibn abi shaiba -part 2-hadith no.-7644-kitab salah)

---

[10]

हजरत जाफर बिन बाकर रदियल्लाहु अन्हु कहते है के मेने हजरत मैमुना रदियल्लाहुअन्हु से पूछा के *किसी **खवारिज** के पीछे नमाज पढ़ी जा सकती है* ?तो फ़रमाया तुम इसके लिए नमाज़ नहीं पढ़ रहे हो। *तुम तो अल्लाह के लिए नमाज पढ रहे हो* हम हज्जाज के पीछे नमाज़ पढ़ा करते थे। वो अजरकि हरूरी था

(ख़वारिज वो लोग है जो सहाबा को मुँह पे काफिर कहते थे.. और हजरत अली रदियल्लाहु अन्हु से बुग्ज यानि किना रखते थे। ख़वारिज के बारे में बहुत सी हदीथ मौजूद है। .वो लोग जहन्नम के लास्ट हिस्से में होंगे। .)

(musannaf ibn abi shaiba -part 2-hadith no.-7647-kitab salah)

[11]

हजरत बिसाम रदियल्लाहु अन्हु कहते है के मेने अबू जाफर रदियल्लाहु अन्हु से सवाल किया के आइमा की पीछे नमाज़ पढ़ी जाएगी ?उन्होंने कहा पढ़ लिया करो .क्यूंकि हम भी उनके साथ नमाज़ पढ़ते है .*हजरत हसन रदियल्लाहु अन्हु और हजरत हुसैन रदियल्लाहु अन्हु भी **मरवान** के पीछे नमाज पढ़ा करते थे*. मेने उनसे कहा के लोग समज ते है की ये तकिया था। .उन्होंने फ़रमाया के ये कैसे हो सकता है ?हसन बिन अली रदियल्लानू अन्हु को मरवान मिबेर पर भला बुरा कहता था ..यहाँ तक के वो वाली बन गया .

(musannaf ibn abi shaiba -part 2-hadith no.-7650-kitab salah)

[12]

हजरत इब्राहिम बिन अबी हफ्सा रदियल्लाहु अन्हु फरमाते है के मेने अली बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु से कहा के अबू हमजा समालि एक गाली सख्स है. और वो कहता है के हम आईमा के पीछे नमाज़ नहीं पढ़े गे. ओर हम इससे निकाह का मामला भी नहीं करेंगे। जिसकी राइ हमारी राइ के बराबर नहीं होगी.. तभी हजरत अली बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया के *हम उनके पीछे नमाज़ भी पढ़ते है और उनके साथ सुन्नत तरीके से निकाह भी करेंगे..*

(musannaf ibn abi shaiba -part 2-hadith no.-7651-kitab salah)

[[[इन में से कुछ हदीथे sunan al kubra al baihaqi me bhi hai....]]]

[13]

हजरत इबराहीम रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते है के इस बात में कोई हर्ज़ नहीं के *बच्चा बालिग होने से पहले माहे रमजान में इमामत करवाए*.

Musannaf Ibne Abi Saiba–3522–Vol–2

Sunan Al Qubra Al Baihaqi—Chapter-698- नफिल नमाज़ पढ़ने वाले के पीछे फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ने का हुकम --hadith—5100

[14]

हजरत हसन फरमाते है के इस बात में कोई हर्ज़ नहीं के *बच्चा बालिग होने से पहले इमामत करवाए.*

Musannaf Ibne Abi Saiba–3523–Vol–2

[[सिर्फ जो हरामी बच्चा हो यानि उसके बाप का पता नहीं हो उसके पीछे नमाज़ नहीं हो सकती :: ये हदीथ इस के बाद वाली है]]

[15]

::: गुलाम और आज़ाद करदह गुलाम की इमामत :::

हजरत आइशा रदियल्लाहु अन्हु की इमामत उनका गुलाम जुक्वान कुरान से देख कर किया करता था इसी तरह *नाबालिग की इमामत भी जायज है* क्यूंकि नबी ने फ़रमाया इमामत वो कराये जिसे सबसे ज्यादा कुरान आता हो.

Bukhari Sarif–Kitabul Azan--Hadith -692-

[16]

हजरत उमर इब्न सुलेमह फरमाते है के हम पानी के एक घाट के पास रहते थे जिस की वजह से काफ्ले हमारे पास से गुजरा करते थे उन में से कितने काफिले ऐसे थे जो नबी के पास से वापस आया करते थे में उनके पास जा के उनकी बात सुना करता था यहाँ तक के मेने कुरान करीम का बहुत सा हिस्सा याद कर लिया था लोग इस्लाम कबूल करने का इन्तिज़ार कर रहे थे। जब मक्काः फ़तेह हो गया तो सब लोग नबी के पास आते रहते और कहते के हमारे कबीले की तरफ से एक नुमाइंदा है और उनको इस्लाम की खबर देने के लिए हाजिर हुवे मेरे वालिद भी नबी के पास हाजिर हुवे जब वापस आने लगे तो नबी ने फ़रमाया अपने में से नमाज़ के लिए उसे आगे करो जो कुरान ज्यादा जनता हो उन्होंने गौर किया तो में नज़र आया और मुझे इमामत के लिए खड़ा कर दिया गया

तब मेरी उम्र 5 या 7 साल थी.

Musannaf Ibne Abi Saiba–3475–Vol–1

Bikhari Sarif –Kitabul Maghazi—Hadith No..4302

Sunan Al Qubra Al Baihaqi—Chapter-706-Page No.729—Hadith No.5137

(((अब इन हदिथो के मुताबिक *ना बालिग लड़के के पीछे नमाज पढ सकते है* जरुरत के तौर पर)))

[17]

:::नाबालिग इमाम अपनी नफिल नमाज़ पढ़ेगा तो पीछे जो बालिग है उनकी नमाज़ कैसे होगी:::

मआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु ईशा की नमाज़ नबी करीम सल्लल्लाहो अलय है वसल्लम के पीछे पढ़ते फिर वापस आके अपनी लोगो कि इमामत किया करते थे.

Bukhari sarif–kitabul azan–hadith no. 700

(((अब इस हदीथ की पूरी तसरीह और जवाब निचे डिटेल में है आप पढ़ले इससे पता चलेगा के जो सहाबी है वो अपनी दूसरी बार नफिल नमाज़ पढ़ते थे जब के उनके पीछे वाले फ़र्ज़ की निय्यत ले ते थे))

इस से पता चला के मआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु जब ईशा की नमाज़ नबी करीम सल्लल्लाहो अलय है वसल्लम के पीछे पढ़ते तो फ़र्ज़ की निय्यत लेते थे और जब अपने लोगो के पास जा कर पढाते तो नफिल की निय्यत से पढ़ते.

इसलिए अब्दुर रज़्ज़ाक और सफ़िये और दार क़ुतनी वगैरह की रिवायत में ये लफ्ज़ सरीह आ गया है के

له تطوع ولهم فريضة

यानि वो दूसरी नमाज़ मआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु के लिए नफिल होती और मुक्तादियो के वास्ते फ़र्ज़ होती थी/

इस हदीथ में कितनी भी जरह मौजूद है उसमे में से में एक का खुलासा कर देता हु.

तहावी ने कहा है के ये इस वक़्त का हुक्म है के जब फ़र्ज़ नमाज़ो को दोबारा पढ़ा जाता था और अब ये हुक्म मंसूख (निकल) हो चूका है

इसके जवाब में :::

[18]

दो आदमी असर की नमाज़ अपने घरमे पढ़ कर नबी करीम सल्लल्लाहो अलय है वसल्लम के पास आये तभी नबी करीम सल्लल्लाहो अलय है वसल्लम नमाज़ पढ़ रहे थे तो उन दोनों ने आप के साथ नमाज़ न पढ़ी जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलय है वसल्लम नमाज़ से फारिग हुवे तो उनपर नाराज़ हुवे और फ़रमाया के तुम अगर अपने घर में नमाज़ पढ़ कर आओ और दूसरी जगह जमात होती हो तो इसमें सरिक हो जाओ के वो नमाज़ तुम्हारे वास्ते नफिल हो जाएगी।

और ये वाक़िया नबी करीम सल्लल्लाहो अलय है वसल्लम के आखरी वक़्त का है इस लिए के ये वाक़िया हज्जतुल विदा का है.

और अब दूसरी हदीथ है उसमे साफ़ साफ़ आ चूका है के ::

[19]

मेरे बाद हाकिम होंगे और वो नमाज़ के वक़्त को निकाल कर नमाज़ पढ़ाएंगे (टाइम से नमाज़ नहीं पढ़ाएंगे) तभी तुम अपनी नमाज़ो को वक़्त पे अपने घरमे पढ़ लेना और फिर उनके पीछे भी पढ़ लिया करना वो तुम्हारे वास्ते नफिल नमाज़ हो जाएगी .

Musannaf Ibne Abi Saiba–7672–Vol--2

[[[इस दोनों हदीथ से दोबारा फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ने की मुमानियत मनसुख हो चुकी है..]]]

---

[20]

::: इमामत का ज्यादा हक़दार कौन :::

इमामत का ज्यादा हक़दार सुल्तान है .फिर क़ाज़ी -फिर मोहल्ला का इमाम -फिर वाली -इस तरतीब से जो इसाबियत में है,,

Fatwae razvia part-6-safa-441

[21]

::: इमामत का ज्यादा हक़दार कौन :::

जुमा के लिए इमाम वही हो सकता है जिस का तक़र्रुर बादशाह से चला आता हो या वो जिसे बा जरूरतरत आम मुस्लमान चुन लेते है। नमाज़े जुमा क़सदन छोड़ के चले जाना और फिर बाद जुमा अपने थोड़े आदमियों को उसी मस्जिद में लाना और दुबारा ख़ुत्बाह दे कर नमाज़ कायम करना हर गिज़ जायज नहीं।

(यानि इस से भी पता चला के सऊदी में जो बादशाह ने इमाम तय कर रखे है उनके पीछे नमाज़ पढ़नी जायज है)

Fatwae razvia part-6-safa-511

[22]

फ़ासिक़ इमाम को रोकना दुस्वार हो जाये तो जुमा की नमाज़ उसकी इक़्तिदा में पढ़लि जाये

Fatwae razvia part-6-safa-440

Fatwae razvia part-6-safa-602